आवधिक लिखित परीक्षा

मध्यावधि से पूर्व (Pre-Mid Term Tests)

अपठित, व्याकरण पाठ्यपुस्तक (क्षितिज भाग-2, गद्य खण्ड-1, 2, 3, काव्य खण्ड-1, 2, 3, 4, कृतिका-1, 2,) एवं लेखन खण्ड के प्रश्नों सहित

टेस्ट-1

अधिकतम अंक 10

खण्ड–'क'

1. **(i)** लेखक के अनुसार समृद्धि और आध्यात्म एक दूसरे के विरोधी नहीं है।

(ii) समृद्धि अपने साथ सुरक्षा तथा विश्वास लाती है, जो अंततः हमारी आजादी को बनाए रखने में सहायक है इसलिए सर्वत्र समृद्धि होने को आवश्यक माना गया है।

(iii) इस गद्यांश का शीर्षक होगा–प्रकृति और हम।

खण्ड–'ख'

2. संयुक्त वाक्य

3. राहत सामग्री मंत्री जी द्वारा बँटवाई गई।

4. **शाबाश**—अव्यय, विस्मयादिबोधक, हर्षबोधक, प्रशंसापरक।

5. करुण रस

खण्ड–'ग'

6. **(i)** बालगोबिन भगत के जीवन एवं आचरण के आधार पर कहा जा सकता है कि वे कबीर को 'साहब' अर्थात् ईश्वर मानते थे। वे कबीर के गीतों को गाते, कबीर के आदेशों और शिक्षाओं का व्यावहारिक रूप से पालन करते थे।

(ii) भगत किसी की चीज को नहीं छूते थे। वे बिना पूछे किसी की चीज का प्रयोग नहीं करते थे। इस नियम का कभी-कभी इतनी बारीकी से पालन करते कि बिना पूछे दूसरे के खेत में शौच के लिये भी नहीं बैठते थे। इस प्रकार के नियम-पालन पर लोगों को हैरानी होती थी।

7. **(i)** नेताजी की मूर्ति में चश्मे की कमी थी; मूर्ति बनाते समय शायद असमंजस की स्थिति रही होगी कि पारदर्शी चश्मा कैसे बनाया जाए? इस कारण अथवा चश्मा बनाते समय कुछ और बारीकी के कारण टूट गया होगा अथवा अलग से फिट किया होगा जो कि निकल गया होगा।

(ii) लेखक नवाबों के विषय में व्यंग्यपूर्ण और नकारात्मक धारणा से ग्रस्त था। वह नवाबों की जीवन-शैली को कृत्रिम और दिखावटी मानता था। वह उन्हें 'नवाबी नस्ल के सफेदपोश' की उपमा देता है।

8. **(i)** लक्ष्मण ने शूर वीरों के गुण बताते हुए कहा कि—वीर योद्धा कभी भी धैर्य को नहीं छोड़ता, वह युद्ध भूमि में अपनी वीरता का प्रदर्शन शत्रु से युद्ध करके करता है, बुद्धिमान योद्धा रणभूमि में शत्रु का वध करता है, वह कभी अपनी बड़ाई अपने मुख से नहीं करता।

(ii) फागुन मास की प्राकृतिक शोभा अत्यंत विविध और मनोहारी है। घर-घर को महकाती पवन, आकाश में अठखेलियाँ करते पक्षी, पत्तों से लदी डालियों और मंद सुगंध से परिपूर्ण पुष्प समूह के इन सारे दृश्यों ने कवि निराला को मंत्रमुग्ध सा कर दिया था।

9. भोलानाथ के पिता सुबह-सबेरे उठकर भोलानाथ को भी नहला-धुलाकर पूजा पर बिठा लेते थे और भोलानाथ के भभूत का तिलक लगाने की जिद करने पर वह उसके ललाट पर भभूत से अर्धचन्द्राकार रेखाएँ बना देते थे। भोलानाथ के सिर पर लम्बी-लम्बी जटाएँ

होने और भभूत लगा देने के कारण पिताजी प्यार से उसे 'भोलानाथ' कहकर पुकारते थे। वे उसे अपने कंधों पर बैठाकर गंगाजी पर लेकर जाते थे। कभी-कभी वे उसके साथ कुश्ती लड़ते और अपने आप हार जाते थे। पिताजी हारने के बाद बनावटी रोना रोने लगते थे जिसे देखकर भोलानाथ खिलखिलाकर हँसने लगता था। पिताजी भोलानाथ को गोरस और भात सानकर बड़े प्यार से खिलाते थे। चूहे के बिल से साँप के निकल आने पर भोलानाथ के डर जाने पर पिताजी तेजी से उसकी तरफ दौड़कर आते हैं और उसे मनाने का प्रयास करते हैं।

अथवा

(क) रानी ने हल्के नीले रंग का सूट बनवाया है जिसका रेशमी कपड़ा हिन्दुस्तान से मंगवाया।

(ख) सौ पौण्ड का खर्चा आना।

(ग) रानी एलिज़ाबेथ की जन्म-पत्री छपना।

(घ) प्रिंस फिलिप के कारनामे छपना। नौकरों, बाबरचियों, खानसामों, अंगरक्षकों की पूरी-पूरी जीवनियाँ छपना।

(ङ) यहाँ तक कि शाही महल में रहने वाले, पलने वाले कुत्तों की तस्वीरों का अख़बारों में छपना।

खण्ड-'घ'

10. 115, मोती कुंज, आगरा

दिनांक .....

पूजनीय पिताजी

सादर चरण स्पर्श।

मैं यहाँ कुशलतापूर्वक रहकर आपकी कुशलता की कामना करता हूँ। आगे समाचार यह है कि हमारे विद्यालय में कम्प्यूटर सिखाने के लिए अतिरिक्त कक्षाएँ लगाई जा रही हैं जिसका शुल्क ₹ 1500 है। पिताजी आप तो जानते ही हैं आजकल कम्प्यूटर ज्ञान अनिवार्य है। जिसे कम्प्यूटर नहीं आता उसे नौकरी भी नहीं मिलती। मैं भी कम्प्यूटर सीखना चाहता हूँ। आशा है आप फीस के पैसे तुरन्त भेज देंगे।

शेष सब ठीक है। माताजी को चरण स्पर्श, छोटी को स्नेह।

आपका पुत्र

क ख ग

❑❑❑

टेस्ट-2

अधिकतम अंक 10

खण्ड-'क'

1. **(i)** जीवन मूल्य समाप्त हो रहे हैं।

(ii) नदियों का अस्तित्व समाप्त होता जा रहा हैं।

(iii) अब प्रकृति की ओर कोई ध्यान नहीं देता।

खण्ड-'ख'

2. सरल वाक्य

3. मुझसे और नहीं सहा जाता।

4. अनिश्चयवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, कर्मकारक

5. शृंगार रस

खण्ड–'ग'

6. **(i)** कैप्टन नेताजी के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए अपने गिने-चुने चश्मों में से एक फ्रेम नेताजी की मूर्ति पर लगा देता था और ग्राहक द्वारा वैसा ही चश्मा माँगने पर वह मूर्ति का चश्मा उतारकर उसे दे देता था और मूर्ति पर दूसरा चश्मा लगा देता था।

(ii) भगत ने अपने बेटे की मृत्यु के बाद भी गीत गाया और पुत्रवधू को पुनर्विवाह के लिए प्रेरित किया। इससे सिद्ध होता है कि वे लोगों को जो उपदेश देते थे उन्हें स्वयं भी करते थे। इस प्रकार उनकी कथनी-करनी में एकरुपता थी।

7. **(i)** फागुन के

(ii) सुगंधित हवाओं का चलना।

8. **(i)** गोपियाँ योग का संदेश उन लोगों को देने को कहती हैं जिनके मन आज किसी को भजते हैं और कल किसी और की बात सोचते हैं क्योंकि उनका चलायमान चरित्र है। गोपियों ने तो श्रीकृष्ण को ही मजबूती से पकड़ रखा है, रात-दिन उन्हीं को भजती हैं।

(ii) बादल प्यासे लोगों को तृप्त करने, नई कल्पना व नई चेतना को जगाने, ललित कल्पनाओं और क्रान्ति को लाने वाले, निडरता, बिजली जैसी ओजस्विता और शीतलता की ओर संकेत करने वाले तथा नवजीवन और नूतन कविता के अर्थों की ओर संकेत करता है।

9. पाठ में आए ऐसे प्रसंग जो दिल को छू गए हैं, निम्नलिखित हैं–

(i) पिताजी का भोलानाथ से खट्टा और मीठा चुम्मा माँगना तथा पिताजी की नुकीली मूँछें भोलानाथ के कोमल गालों पर चुभने पर उसके द्वारा झुँझलाकर उनकी मूँछें नोंचने लग जाना।

(ii) माँ द्वारा भोलानाथ को तोता, मैना, कबूतर, हंस, मोर आदि के बनावटी नाम से कौर बनाकर यह कहते हुए खिलाना कि जल्दी खा लो नहीं तो ये उड़ जाएँगे।

(iii) बच्चों के खेल के बीच में पिताजी का आ जाना और बच्चों का लजाकर खेल छोड़कर भाग जाना।

(iv) भोलानाथ का अपने साथियों के साथ टीले पर चूहे के बिल में पानी डालने पर साँप का निकल आना और माँ-पिताजी का भोलानाथ के प्रति चिंतित होना।

(v) माँ का बालक भोलानाथ को पकड़ कर तेल लगाना और उसका सुबकना आदि।

अथवा

महात्मा गाँधी, सरदार पटेल, विट्ठल भाई पटेल, महादेव देसाई जो भारत को आजाद करके देश की प्रतिष्ठा को कायम कर सके। वस्तुत: यह कथन कि इन महापुरुषों की नाक जॉर्ज पंचम की नाक से बड़ी थी इस बात का द्योतक है कि हमारे ये नेता जॉर्ज पंचम से हमारे लिये अधिक सम्मानित हैं। हम विदेशी लोगों के गीत अभी भी गाएँ तो यह उपयुक्त नहीं है। यह पाठ लेखक के द्वारा देश के स्वाभिमान के प्रति संवेदनशील होने का परिचायक है।

खण्ड–'घ'

10. **वन और पर्यावरण**

मानव जीवन के लिए वन बहुत उपयोगी है, किन्तु सामान्य व्यक्ति इसके महत्व को नहीं समझ पा रहा है। जो व्यक्ति वनों में रहते हैं या जिनकी जीविका वनों पर आश्रित है वे तो वनों के महत्व को समझते हैं, लेकिन जो लोग वनों में नहीं रह रहे हैं वे तो इन्हें केवल प्राकृतिक शोभा का साधन मानते है। भूतपूर्व प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में, ''एक उगता हुआ वृक्ष राष्ट्र की प्रगति का जीवित प्रतीक है।''

वन हमें प्रकृति से मिला अनुपम उपहार है। वन प्राकृतिक ऊर्जा का मुख्य स्रोत है। वनों से हमें भोजन बनाने के लिये ईंधन, मकान व फर्नीचर बनाने के लिये लकड़ी तथा कागज बनाने के लिये छाल प्राप्त होती है। वनों से हमें अनेक प्रकार की औषधियाँ प्राप्त होती हैं। ये पृथ्वी के सौन्दर्य को बढ़ाकर आकर्षित करते हैं। वन प्रचुर मात्रा में फल देकर मानव का पोषण करते है। वन अनेक वन्य पशु-पक्षियों को संरक्षण प्रदान करते हैं। किसी भी देश के आर्थिक विकास के लिये वनों का महत्वपूर्ण स्थान है। वनों से उद्योगों के कच्चे माल के रूप में गोंद, शहद, जड़ी-बूटियाँ, कत्था, लाख, बाँस, बेंत आदि अनेक वस्तुएँ प्राप्त होती हैं।

हमारी वन सम्पदा पर्यावरण को संतुलित करती है। वृक्षों की अधिकता से पर्याप्त वर्षा होती है। जलवायु शीतल एवं स्वास्थ्यप्रद होती है। तापमान में कमी होती है। पृथ्वी की उर्वरा शक्ति बढ़ती है तथा मरूस्थल के विकास को रोकती है। वृक्ष मानसूनी हवाओं को अपनी ओर खींचते

हैं। वृक्ष हमारे द्वारा छोड़ी गयी विषैली हवा को ग्रहण करके बदले में हमें स्वच्छ एवं स्वास्थ्यवर्धक ऑक्सीजन वायु प्रदान करते हैं। वृक्ष मिट्टी के कटाव को रोकते हैं। बाढ़ को नियंत्रित करके भूमि का कटाव रोकते हैं।

वृक्षों के महत्व को देखते हुये हमारे लिये वनों का संरक्षण और संवर्धन अत्यन्त आवश्यक है। इसके लिये वृक्षारोपण एवं वन महोत्सव जैसे आयोजन करने चाहिये। वनों की सुरक्षा एवं उन्नति के लिये सन् 1952 में एक प्रस्ताव पास करके यह निश्चय किया गया था कि सम्पूर्ण क्षेत्रफल के एक-तिहाई भाग में वनों और वृक्षों का लगाया जाए। इसके लिये केन्द्र व राज्य सरकारें सक्रिय योगदान दे रही है। प्रतिवर्ष जुलाई मास में वन-महोत्सव मनाते हुए देश के कोने-कोने में करोड़ों पौधे लगाए जाते हैं। वनों की अंधाधुंध कटाई रोकने के लिये विभिन्न राज्यों में 'वन निगम' बनाये गए हैं। इस प्रकार वनों के संवर्धन व संरक्षण के लिये सरकार द्वारा निरन्तर प्रयास किए जा रहे हैं।

व्यक्तिगत स्तर पर भी अनेक आंदोलनों का संचालन किया जाता रहा है। इनमें उत्तराखंड प्रदेश की महिलाओं का 'चिपको आन्दोलन' प्रमुख है, जिसका सफल नेतृत्व श्री सुंदरलाल बहुगुणा ने किया।

प्राकृतिक वन प्राचीन काल से ही मानव के सहयोगी रहे है। आदिकाल में वन ही मानव का घर था। वृक्षों की छाल व पत्ते उसके वस्त्र व फल, कन्दमूल आदि ही उसका आहार था। वनों से ही मानव की प्रत्येक आवश्यकता पूर्ण होती है। अत: वन व मानव का अटूट सम्बन्ध है।

अथवा

मेरी प्रिय पुस्तक

पुस्तकें ज्ञान का भंडार होती हैं। वे ज्ञान को संरक्षित कर उसे प्रचारित-प्रसारित करती हैं। बुद्धि के विकास के लिये ज्ञान हम पुस्तकों से ही प्राप्त होता है। किसी भी देश और काल की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक जानकारी उस काल में रचित साहित्य से आसानी से हो जाती है। साहित्य समाज का दर्पण होता है।

मेरी प्रिय पुस्तक का नाम है—'रामचरितमानस'। इसके रचयिता हैं—गोस्वामी तुलसीदास। वे रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि हैं। वे भारतीय साहित्य के नक्षत्र है। कहा गया है—

सूर-सूर तुलसी शशि, उड्गन केशवदास।
तुलसीदास जी को चन्द्रमा माना गया है।।

यद्यपि 'रामचरितमानस' एक धार्मिक पुस्तक है परन्तु यह हमें मानवीय गुणों से परिचित कराकर, हमें सद्मार्ग पर चलने के लिये प्रेरित करती है।

'रामचरितमानस' कथा की विशेषता है इसका जन-जीवन से जुड़ाव है। यह सरल एवं सुबोध भाषा में रची गयी है। संस्कृत के विद्वान होने के बाबजूद तुलसीदास ने इस पुस्तक की रचना अवधी जैसी जनसाधारण की भाषा में की। इसके अतिरिक्त इस पुस्तक की जिस दूसरी विशेषता ने मुझे प्रभावित किया वह है कि इसमें हमारे जीवन के सभी पहलुओं का आदर्श स्वरूप दर्शाया गया है। इसके सभी पात्रों के चरित्र हमें हर स्थिति में कर्त्तव्य पथ पर आगे बढ़ना सिखलाते हैं। आज कई शताब्दियों के बाद भी इसके रचयिता तुलसीदास जी को बहुत सम्मान से याद किया जाता है। विदेशी विद्वान भी इसका गुणगान करते हैं। लेकिन इसके रचनाकाल में इसकी भाषा संस्कृत न होने के कारण इस पुस्तक को विरोध का सामना करना पड़ा था।

इस पुस्तक के रचनाकाल में समाज में नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा था। परिवार, समाज के आदर्शों में बिखराव आ रहा था। ऐसे समय में लोगों को धर्म की शिक्षा देने, आदर्शों की स्थापना के लिये इस ग्रन्थ की सूचना की गयी। इस ग्रन्थ में 'रामराज्य' स्थापित करने, आदर्श पिता, आदर्श पुत्र, आदर्श पत्नी और आदर्श सेवक के उदाहरण प्रस्तुत किये है। वास्तव में यह पुस्तक जीवन जीने के तरीके सिखाती है।

रामचरितमानस भारत के घर-घर में पढ़ी जाने वाली पुस्तक है। हमें इसमें छिपे संदेश को समझने का प्रयास करते हुये वर्तमान समय में प्रासंगिक मूल्यों को अपनाने का प्रयास करना चाहिये।

❑❑❑

मध्यावधि (Mid Term Tests)

अपठित, व्याकरण, पाठ्यपुस्तक (क्षितिज भाग-2, गद्य खण्ड-1, 2, 3, 4, 5, 6 काव्य खण्ड-1,2,3,4,5,6,7 कृतिका-1,2,3,4) एवं लेखन खण्ड के प्रश्नों सहित

टेस्ट-1

अधिकतम अंक 10

खण्ड-'क'

1. **(i)** प्रकृति के अनुशासन तोड़ने का परिणाम भारी तबाही के मंजर के रूप में सामने आता है।

(ii) प्रकृति सहनशीलता, धैर्य, अनुशासन की प्रतिमूर्ति के रूप में हमारा पथ-प्रदर्शन करती है, हमारे भीतर संघर्ष का भाव जगाकर समस्या के हल के लिए उत्प्रेरक का काम करती है। जल, जंगल, जमीन आदि उपहार प्रदान करती है।

(iii) इस गद्यांश के माध्यम से लेखक ने यह संदेश दिया है कि हम अपने पुराने रवैए को त्याग कर अपने आचरण में यथोचित सुधार करें और प्रकृति की सीमा का अतिक्रमण न करें अन्यथा हमें गंभीर प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ेगा।

खण्ड-'ख'

2. हमने स्वयं किया तो पसीने छूट गए।

3. माँ से विदा होते समय राधा से नहीं रोया गया।

4. कुटिया-संज्ञा, जातिवाचक, कर्मकारक, एकवचन, स्त्रीलिंग।

5. शान्त रस।

खण्ड-'ग'

6. **(i)** फादर बुल्के ने इंजीनियरिंग अंतिम वर्ष की पढ़ाई इसलिए छोड़ दी, क्योंकि वे संन्यासी बनना चाहते थे।

(ii) फादर बुल्के ने संन्यास लेते समय भारत जाने की शर्त रखी और इसका यह कारण था कि उनका मन भारत आने के लिए करता था।

7. **(i)** शिकायती पत्र मिलने पर भी पिता ने नाराजगी इसलिए प्रकट नहीं की क्योंकि यह कार्यवाही देश की आजादी के लिए थी जिस पर उन्हें गर्व था।

(ii) उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ को बालाजी के मंदिर पर रोजाना नौबत खाने रियाज़ के लिए जाना पड़ता था। वे रसूलन बाई और बतूलन बाई के यहाँ से होकर गुज़रने वाले रास्ते से जाते हैं क्योंकि इस रास्ते से जाना उन्हें अच्छा लगता है। उन्हें अपने जीवन के आरम्भिक दिनों में संगीत के प्रति आसक्ति इन्हीं गायिका बहनों को सुनकर मिली।

(iii) हालदार साहब के मन में देशभक्तों के लिए बहुत सम्मान था। वे कस्बे में लगी नेताजी की मूर्ति पर चश्मा लगाने वाले कैप्टन नाम के साधारण व्यक्ति की देशभक्ति की भावना के प्रति श्रद्धाभाव रखते थे और साथ ही देशभक्तों के मजाक उड़ाने वालों की आलोचना से दु:खी होने वाले भावुक देशप्रेमी इंसान हैं।

(iv) जन्मभूमि रेम्सचैपल, कर्मभूमि भारत। भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं भाषा से प्रभावित, हिन्दू धर्म के मर्म को समझने की जिज्ञासा।

8. **(i)** इसका आशय बच्चे की आँखों से आँसू टपकने से है। ऐसा कवि की कठोर हथेलियों के स्पर्श से हुआ।

(ii) कृष्ण से एकनिष्ठ प्रेम करने वाली गोपियाँ जब उनके हाथों छली जाती हैं तब उन्हें अहसास होता है कि अपने भोलेपन के कारण वे कृष्ण को समझ नहीं पाईं। भोलेपन में कृष्ण के प्रति ऐसे समर्पित हुईं जैसे गुड़ के साथ चींटी। कृष्ण ने प्रेम का उत्तर नहीं दिया बल्कि योग का कटु संदेश भिजवाया।

(iii) आपकी वीरता का बखान करने पर भी परशुराम को संतोष नहीं हुआ। अत: लक्ष्मण ने परशुराम को पुन: आत्मप्रशंसा करने को कहा।

(iv) वर्तमान के दु:ख को बढ़ावा देना और जीवन के यर्थाथ से मुँह मोड़ वैभव के पीछे भागना।

9. पर्वतीय स्थलों पर बढ़ती व्यावसायिक गतिविधियों का इन स्थलों व प्रकृति पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। प्रदूषण बढ़ रहा है। प्रकृति में असंतुलन बढ़ा है। पर्वतीय स्थलों पर घूमने आने वाले पर्यटक वहाँ पर अपने साथ ले जाए गए सामान, कूड़ा-करकट, बचा हुआ भोज्य पदार्थ आदि वहीं पर छोड़ आते हैं; जिसके कारण उनका प्राकृतिक सौन्दर्य नष्ट तो होता ही है साथ ही साथ प्रदूषण भी बढ़ता है। इसलिए इन सबको रोकने हेतु जागरूकता अभियान चलाने चाहिए। विभिन्न प्रकार की गतिविधियों को नियंत्रित किया जाए। पहाड़ों को स्वच्छ बनाए रखने के लिए प्रेरित किया जाए। सरकार द्वारा कठोर कदम उठाए जाने चाहिए जिससे कि इनके प्राकृतिक सौंदर्य को बचाया जा सके।

अथवा

नई दिल्ली की कायापलट करने के लिए सभी मुख्य इमारतों की मरम्मत की गई होगी तथा उन्हें रँगा जा रहा होगा। सड़कों को पानी से धोया जा रहा होगा तथा वहाँ रोशनी की व्यवस्था की गई होगी। रास्तों पर दोनों देशों के झंडे लगाए गए होंगे। गरीबों को सड़कों के किनारे से हटाया गया होगा। दर्शनीय स्थानों की सजावट की गई होगी। रानी की सुरक्षा के कड़े प्रबन्ध किए गए होंगे। सरकारी और अर्द्धसरकारी भवनों की रंगाई-पुताई की गई होगी। मुख्य मार्गों के किनारे के पेड़ों की कटाई-छँटाई की गई होगी। जगह-जगह स्वागत द्वार बनाए गए होंगे। सरकारी भवनों पर दोनों देशों के ध्वज लगाए गए होंगे।

खण्ड-'घ'

10.

मयूर नोबल स्कूल
आवश्यकता है **गणित अध्यापक की** **योग्यता - बी.ए, बी.एड.,** **कम से कम दो वर्षों का अनुभव** **आकर्षक वेतनमान**
दिनांक : 2, 3, 4 अप्रैल को प्रधानाचार्य कक्ष में मिलें। **✆ : 72158 94312**

अथवा

सेवा में

प्रभारी

आधार पहचान पत्र

जिला-फिरोजाबाद

विषय-आधार पहचान पत्र न मिलने की शिकायत

महोदय,

दिनांक 20-04-XX को फिरोजाबाद विकास खण्ड के नागरिकों के 'आधार पहचान' पत्र बनाने के लिए जगह-जगह कैम्प लगाए गए थे। ऐसा ही एक कैम्प विभव नगर फिरोजाबाद में स्थित मुंशी महाराज इंटर कॉलेज में भी लगा था जहाँ मैंने समस्त औपचारिकताएँ पूरी कर अपना 'आधार पहचान पत्र' तैयार करवाने का प्रयत्न किया। मुझसे कहा गया था कि एक माह के भीतर आपका 'आधार पहचान पत्र' आपके पते पर डाक से भेज दिया जाएगा। खेद है कि, दो माह बीतने के बाद भी अभी तक मेरा 'आधार पहचान पत्र' नहीं आया है।

वर्तमान समय में यह पहचान पत्र ही नागरिकों के लिए अत्यन्त आवश्यक है। यह आई. डी. बैंक, पोस्ट ऑफिस, रेल, आयकर विभाग आदि में भी मान्य है। पासपोर्ट बनाने में भी आधार पहचान पत्र की उपयोगिता है।

अत: आपसे निवेदन है कि मेरा आधार पहचान पत्र शीघ्र ही प्रदान करने की कृपा करें।

भवदीय

राज किशोर गुप्ता

34/2, विजयनगर सेक्टर-1 फिरोजाबाद

मो. 9422512575

दिनांक 30-9-XX

❑❑❑

टेस्ट-2

अधिकतम अंक 10

खण्ड-'क'

1. **(i)** इससे आशय है कि ऋषिमुनि व साधुसंत लोकहित में स्वयं कष्ट झेलते हैं।

(ii) वे स्वयं दीपक के समान जलकर जन-जीवन सँवारते हैं।

(iii) 'निरन्तर' शब्द का समानार्थक पद्यांश अविरल है।

खण्ड-'ख'

2. उन्होंने जैसे ही मूर्ति देखी, वे रुक गए।

3. समर्थकों ने पुष्पवर्षा की।

4. **बुद्धिमान—** विशेषण, छात्र विशेष्य का विशेषण, गुणवाचक, पुल्लिंग, एकवचन। **छात्र—** संज्ञा, जातिवाचक पुल्लिंग एकवचन।

5. भयानक रस।

खण्ड-'ग'

6. **(i)** कबीर अपने समय के एक महान समाज-सुधारक थे। उन्होंने समाज में जन्मी अनेक बुराइयों को दूर करने का प्रयास किया। जाति-पाति, ऊँच-नीच, बाह्य-आडम्बर आदि। कबीर किसी एक जाति, धर्म तथा देश का कल्याण नहीं करना चाहते थे वरन समूची मानव जाति का कल्याण करना चाहते थे। उनके इन्हीं गुणों के कारण भगत जी को उन पर अगाध श्रद्धा हो गई थी।

(ii) मानवीय गुणों से युक्त, करुणा की भावना से परिपूर्ण, मानवों के प्रति कल्याण की भावना, अपनत्व, ममता, करुणा, प्रेम, वात्सल्य तथा सहृदयता के गुणों के कारण मानवीय करुणा की दिव्य चमक कहा गया है।

(iii) पड़ोस कल्चर छूट जाने से आज की पीढ़ी संस्कार विहीन हो रही है। पड़ोस के बालकों को डाँटने-डपटने या स्नेह करने का अधिकार सब का था परन्तु अब पड़ोस कल्चर समाप्त हो रहा है। आपसी सम्बन्धों में आत्मीयता का अभाव हो गया है।

(iv) संगीतज्ञ खाँ साहब विद्यार्थियों के लिए आदर्श हैं। सच्ची लगन, बनाव-शृंगार की अपेक्षा सादगी, समर्पण, अहंकारहीनता, सांप्रदायिक सौहार्द्र, समन्वयकारी दृष्टि आदि मूल्यों की शिक्षा उनके जीवन से मिलती है।

7. **(i)** बच्चों की कल्पनाएँ मधुर होती हैं तथा बदलती रहती हैं। बादल भी बार-बार अपना रूप बदलते रहते हैं।

(ii) बादल सुन्दर, काले-घुँघराले बालों वाले हैं। वे अपने हृदय में बिजली छिपाए हुए तथा नया जीवन प्रदान करने वाले हैं।

8. **(i)** गोपियों के अनुसार योग साधना को एक कड़वी ककड़ी के समान व एक ऐसी व्याधि के समान माना है जिसे पहले कभी न देखा, न सुना और न भोगा है। वे उसे निरर्थक एवं अरुचिकर मानती हैं।

(ii) बादल पीड़ित-प्यासे जन की आकांक्षा को पूरा करने वाले हैं। क्रान्ति चेतना को सम्भव करने वाले हैं।

(iii) संगतकार मुख्य गायक का सहायक कलाकार होता है। प्राचीनकाल से उसका यही काम है कि वह अपनी आवाज़ की गूँज को मुख्य गायक की गरजदार आवाज़ में मिलाकर उसकी आवाज़ को बल प्रदान करे। उसकी आवाज की गूँज मुख्य गायक के स्वर को कोमलता प्रदान करती है।

(iv) कन्यादान कविता एक शिक्षाप्रद कविता है जिसमें माँ ने बेटी को स्त्री के परम्परागत आदर्श रूप से हटकर शिक्षा दी है।

9. जितेन नार्गे एक कुशल गाइड है। वैसे तो पर्यटक वाहनों में ड्राइवर अलग और गाइड अलग होते हैं; लेकिन जितेन ड्राइवर-कम-गाइड है। अत: हम कह सकते हैं कि एक कुशल गाइड को वाहन चलाने में भी कुशल होना चाहिए ताकि आवश्यकता पड़े तो वह ड्राइवर की भूमिका भी निभा सके।

एक कुशल गाइड को अपने क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति तथा विभिन्न स्थानों के महत्व तथा उनसे जुड़ी रोचक जानकारियों का ज्ञान भी होना चाहिए, जैसे कि जितेन को पता है कि देवानंद अभिनीत 'गाइड' फिल्म (यह अपने समय की अति लोकप्रिय फिल्म थी) की शूटिंग लोंग स्टॉक में हुई थी। इससे पर्यटकों का मनोरंजन भी होता है और उनकी स्थान में रुचि भी बढ़ जाती है।

जितेन यद्यपि नेपाली है, लेकिन उसे सिक्किम के जन-जीवन, संस्कृति तथा धार्मिक मान्यताओं का पूरा ज्ञान है। वहाँ की कठोर जीवन-स्थितियों से भी वह भली-भाँति परिचित है। यह किसी कुशल गाइड का आवश्यक गुण है।

जितेन का सबसे अच्छा गुण है—मानवीय संवेदनाओं की समझ तथा परिष्कृत संवाद शैली। वह सिक्किम की सुन्दरता का गुणगान ही नहीं करता, वहाँ के लोगों के दु:ख-दर्द के बारे में लेखिका से बातचीत करता है। उसकी भाषा बड़ी परिष्कृत और संवाद का ढंग अपनत्व से पूर्ण है, जो किसी गाइड का आवश्यक गुण है।

अथवा

भोलानाथ का अपने पिता से अत्यधिक जुड़ाव था, फिर भी विपदा के समय वह पिता के पास न जाकर माँ की शरण लेता है। मेरे अनुसार इसके निम्नलिखित कारण हो सकते हैं-

(क) बच्चा किसी भी परेशानी में अपनी माँ के साथ रहकर ही सुरक्षित महसूस करता है। परेशानी में उसे पिता का साथ नहीं सुहाता।

(ख) माँ के आँचल में उसे दु:खों का पता नहीं चल पाता और वह आराम से रहता है।

(ग) माँ प्यार, ममता और वात्सल्य की खान होती है, इसलिए जब बच्चे को कोई भी परेशानी या कष्ट होता है तो वह माँ के पास जाता है पिता के नहीं।

(घ) विपदा के समय बच्चे को माँ के लाड़ और उसकी गोद की जरूरत होती है। उसे जितनी कोमलता माँ से मिल सकती है उतनी पिता से नहीं।

(ङ) बच्चा अपनी माँ से भावनात्मक रूप से अधिक जुड़ाव महसूस करता है क्योंकि माँ बच्चे की भावनाओं को अच्छी तरह से समझती है।

यही कारण है कि बच्चा माँ की गोद में ही सुख, शान्ति और चैन पाता है।

खण्ड-'घ'

10. सेवा में,

स्वास्थ्य अधिकारी महोदय,

स्वास्थ्य विभाग, शहरी क्षेत्र,

दिल्ली नगर निगम,

चाँदनी चौक, दिल्ली-110 006

विषय : मोहल्ले में फैली गंदगी के संबंध में।

महोदय,

मैं आपका ध्यान अपने मोहल्ले में फैली गंदगी की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ। काफी दिनों से सड़क के किनारों पर गंदगी के ढेर लगे हुए हैं। सफाई कर्मचारी भी लापरवाही बरतने में कोई कमी नहीं करते। वे जान-बूझकर कूड़े को नहीं उठाते। वे चाहते हैं कि उन्हें अतिरिक्त पैसा दिया जाए। कूड़ा न उठाने के कारण चारों तरफ बदबू फैल रही है। नालियों में गंदे पानी के जमाव के कारण वहाँ मच्छर पनप रहे हैं। यदि यह कूड़ा नहीं उठाया जायेगा तो बीमारी फैलने का खतरा बढ़ जायेगा। आवारा पशु कूड़े के ढेर को चारों तरफ बिखेर देते हैं। इससे आवागमन में भी असुविधा हो रही है।

आशा है आप क्षेत्र के सफाई कर्मचारियों को तुरंत उचित निर्देश देकर कार्यवाई करने की कृपा करेंगे।

भवदीय

दिनेश कुमार सेठ,

सचिव

मोहल्ला सुधार समिति

675-ए, कटरा नील,

दिल्ली- 110 006

दिनांक : .....

अथवा

❑❑❑

मध्यावधि के पश्चात (Post-Mid Term Tests)

अपठित, व्याकरण, पाठ्यपुस्तक (पद्यभाग, गद्यभाग एवं कृतिका)एवं लेखन खण्ड के प्रश्नों सहित

टेस्ट–1

अधिकतम अंक 10

खण्ड–'क'

1. **(i)** आत्मोत्थान का अर्थ है–अपना उत्थान करना।

(ii) आत्मा का मन और इंद्रियों पर अधिकार होने के कारण इसे सर्वोपरि सत्ता कहा गया है।

(iii) बाह्य पदार्थों के आकर्षण को कम करना, अंतर्मुखी बनना, विषयों की ओर दौड़ने वाली इंद्रियों को रोककर उन्हें अपने वश में करना ही इन्द्रिय निग्रह है।

खण्ड–'ख'

2. सरल वाक्य

3. तुलसीदास द्वारा/के द्वारा 'रामचरितमानस' की रचना की गई।

4. **लड़का—** संज्ञा, जातिवाचक, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ताकारक, क्रिया 'निकला' का कर्ता।

5. **वीर रस—**स्थायी भाव–उत्साह।

खण्ड–'ग'

6. **(i)** अमीरुद्दीन की माता मिट्ठन बाई तथा पिता उस्ताद पैंगबरबख्श खाँ थे।

(ii) रीड सोन नदी के तट पर पायी जाने वाली नरकट घास से बनाई जाती है, जिससे शहनाई बजाने में प्रयुक्त होने वाली रीड बनती है। यह अन्दर से पोली होती है। फूँककर बजाए जाने वाले वाद्य जिनमें रीड का प्रयोग होता है। 'नय' कहे जाते हैं। अत: इस वाद्य को 'शाहेनय' अर्थात् 'वाद्यों का शाह' कहा जाता है। इसी से शहनाई शब्द की भी उत्पत्ति हुई।

7. **(i)** शहनाई को मंगल ध्वनि का वाद्य माना जाता है। इसका प्रयोग मांगलिक–विधि–विधानों के अवसर पर ही होता है तथा बिस्मिल्ला खाँ शहनाई वादन के क्षेत्र में अद्वितीय स्थान रखते हैं। इसलिये उन्हें शहनाई की मंगल ध्वनि का नायक कहा गया है।

(ii) शीला अग्रवाल लेखिका के कॉलेज में हिन्दी अध्यापिका थीं तथा खुले दिमाग वाली प्रबुद्ध महिला थीं। उनके सम्पर्क में आकर मन्नू जी की समझ का दायरा बढ़ा। वे उसे चुन–चुनकर अच्छी पुस्तकें पढ़ने के लिए देतीं और उन पर लम्बी बहस भी करतीं। इससे लेखिका की सोच विकसित हुई। यही नहीं अपितु वे देश–दुनिया की राजनीतिक स्थिति से भी उसे अवगत करातीं और अपनी जोशीली बातों से स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी की प्रेरणा भी देतीं। लेखिका के व्यक्तित्व निर्माण में निश्चय ही शीला अग्रवाल का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

(iii) नवाब का व्यवहार यह दर्शाता है कि वे बनावटी जीवन–शैली के अभ्यस्त हैं। उनमें दिखावे की प्रवृत्ति है। वे रईस नहीं हैं, बल्कि रईस होने का ढोंग कर रहे हैं।

(iv) लेखक ने भीड़ से बचकर एकांत में नई कहानी के संबंध में सोचने और खिड़की से प्राकृतिक दृश्य देखने का आनंद लेने के लिये सेकंड क्लास का टिकट लिया।

8. **(i)**
- माँ के दुख की।
- क्योंकि वह अपनी पुत्री का कन्यादान कर रही है।

(ii) मुख्य गायक को गायन के सुरताल के लिए वाद्य यंत्रों की आवश्यकता होती है। गायक को थकान के समय सुर की आरोह अवरोह इत्यादि के लिए संगतकार की आवश्यकता होती है।

(iii) 'दुविधा हत साहस है, दिखता है पंथ नहीं', कथन में कवि ने मानव मन के यथार्थ को चित्रित किया है कि मानव मन दुविधा में पड़ा है कि हम यथार्थ में जिएँ या काल्पनिक सपनों में, क्योंकि मानव की काल्पनिक दुनिया में विचरण करने की प्रवृत्ति होती है। वह इसी प्रवृत्ति में जीता हुआ वास्तविकता से दूर भागता है, परंतु वह अंत में निराश होता है।

(iv) कृषक का जीवन कृषि पर आधारित है। वह दिन-रात, समय-असमय, दु:ख की चिंता न करते हुए अपने परिश्रम से बीज बोने से लेकर फसल तैयार होने तक का धैर्य रखता है अत: उसके धैर्य और अथक परिश्रम की पराकाष्ठा को देखकर कृषक को अधिक महत्व दिया गया है।

9. लेखक को डिब्बे में आया देखकर नवाब साहब ने असंतोष, संकोच तथा बेरुखी दिखाई, लेकिन थोड़ी देर बाद उन्हें अभिवादन कर खीरा खाने के लिए आमंत्रित किया। लेखक को उनका यही भाव परिवर्तन अच्छा न लगा, क्योंकि अभिवादन सदा मिलते ही होता है। पहले अरुचि का प्रदर्शन और कुछ समय बाद अभिवादन, कोई औचित्य नहीं। लेखक को यह भी लगा कि नवाब शराफ़त का भ्रमजाल बनाए रखने के लिए उन्हें मामूली व्यक्ति की हरकत में लथेड़ लेना चाहते हैं।

अथवा

जब लेखिका ने हिमालय की घाटियों में घूमना प्रारम्भ किया तब एक जगह हिचकोले खाती लेखिका की जीप 'लोंग स्टॉक' नामक जगह पहुँची। गाइड जितेन बताने लगा यहाँ 'गाइड' नामक फिल्म की शूटिंग हुई थी। यहाँ एक पत्थर स्मारक के रूप में भी है। उन्हीं रास्तों पर लेखिका ने एक कुटिया के अन्दर घूमता चक्र देखा जो धर्म चक्र बताया गया। इसको घुमाने से सारे पाप धुल जाते हैं। वहाँ के लोगों की आस्थाएँ, विश्वास, पाप-पुण्य की अवधारणाएँ एक जैसी हैं। लेखिका ने आगे बढ़ते हुए स्वेटर बुनती नेपाली युवतियाँ देखीं, और पीठ पर भारी-भरकम कार्टन ढोते हुए काम करती युवतियाँ भी देखीं।

खण्ड–'घ'

10. **आतंकवाद की समस्या**

आतंकवाद का शाब्दिक अर्थ है—भय अथवा दहशत, अर्थात् किसी व्यक्ति, समुदाय अथवा राष्ट्र के द्वारा अपनी स्वार्थ सिद्धि अथवा निहित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए की जाने वाली हिंसात्मक, राष्ट्रद्रोही एवं गैरकानूनी गतिविधि को आतंकवाद कहते हैं।

आज पूरा विश्व आतंकवाद की भयावह समस्या से जूझ रहा है। विश्व में कई संगठन आतंकवादी गतिविधियों को अंजाम दे रहे हैं। आतंकवाद का एक ही उद्देश्य होता है—हिंसा के माध्यम से लोगों को भयभीत करना एवं विश्व की शान्ति भंग करना। सबसे बड़ा आतंकी हमला 11 सितम्बर, 2001 को अमेरिका पर हुआ जिसने सम्पूर्ण विश्व को हिलाकर रख दिया। हजारों व्यक्ति पलक झपकते ही काल का ग्रास बन गए। आज रूस, बांग्लादेश, अफगानिस्तान, भारत एवं पाकिस्तान आदि देश आतंकवाद की समस्या से जूझ रहे हैं।

स्वतन्त्रता के बाद भारत में आतंकवाद के अनेक चेहरे उभरकर आए हैं। कभी वह क्षेत्रवाद के रूप में उभरा है तो कभी भाषावाद के रूप में। पूर्व में पंजाब में यह आग भयंकर रूप में उभरी थी। जम्मू-कश्मीर में तो इनकी गतिविधियाँ चरम पर हैं। असम, नगालैण्ड आदि आतंकवाद के साए में जी रहे हैं। भारत में सबसे भयंकर आतंकी हमला 26 नवम्बर, 2008 को हुआ था। जब कुछ आतंकियों ने कुछ ही घण्टों में पूरी मुम्बई को अपने कब्जे में कर लिया था।

13 दिसम्बर, 2001 को भारत की संसद पर आतंकी हमला एक तरह से हमारे देश को खुली चुनौती थी। भारत में आतंकवाद की वर्तमान समस्या के लिए प्रमुख रूप से हमारी राजनीतिक नीतियाँ ही दोषी हैं। 1947 से आज तक हमारे राजनेता देश को एक सूत्र में नहीं बाँध पाए, उन्होंने वोट के लालच में जाति, सम्प्रदाय, धर्म, भाषा, क्षेत्रीयता आदि के जो बीज बोए थे, वे आज पेड़ बनकर खड़े हैं। बढ़ती हुई बेरोजगारी एवं धार्मिक उन्माद ने भी आतंकवाद को बढ़ाने में अहम भूमिका निभाई है। जम्मू-कश्मीर के पाकिस्तान समर्थक आतंकवाद से आज सारा देश त्रस्त है।

आतंकवाद रोकने के उपाय—सरकार ने आतंकवादियों के विरुद्ध कार्यवाही के लिए टाडा कानून बनाया है। सीमा पर कँटीले तार लगाए हैं। जाँबाज सैनिक और अर्द्धसैनिक बल निरन्तर सीमा की रखवाली कर रहे हैं।

उपसंहार—आतंक की समस्या से राष्ट्रीय नेतृत्व और राष्ट्रवासियों को दृढ़ता से निपटना होगा। समय आ गया है कि हम आतंकवाद को खाद-पानी देने वाली समस्याओं को भी समूल नष्ट करने के विषय में ठोस कदम उठाएँ एवं आर-पार की लड़ाई लड़ें केवल मोमबत्ती जलाकर ही इस समस्या से छुटकारा नहीं हो सकता।

अथवा

कम्प्यूटर : आज की आवश्यकता

आज का विश्व विज्ञान की नींव पर टिका है। मनुष्य ने विज्ञान के द्वारा अनेक शक्तियाँ, सुख-सुविधाएँ तथा चमत्कारी उपकरणों का आविष्कार किया है जिसमें कम्प्यूटर अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यह ऐसा इलेक्ट्रॉनिक मस्तिष्क है जिसने अपनी अनगिनत विशेषताओं के बल पर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दस्तक दी है।

इस प्रगति में कम्प्यूटर का आविष्कार इस शताब्दी की सर्वाधिक चमत्कारी घटना है। सन् 1926 में टेलीविजन का आविष्कार होने पर वैज्ञानिकों ने कम्प्यूटर के सम्बन्ध में अनुसंधान प्रारम्भ किया। लगभग डेढ़ दशक के अन्तराल में अमेरिका तथा इंग्लैण्ड के वैज्ञानिकों ने मानव के नये मस्तिष्क के रूप में कम्प्यूटर का आविष्कार कर वैज्ञानिक प्रगति का नया अध्याय प्रारम्भ किया। आरम्भिक कम्प्यूटर इतने स्थूलकाय थे और उनका संचालन इतना श्रमसाध्य था कि कम्प्यूटर का कोई उज्ज्वल भविष्य नहीं दिखाई देता था। सर्वप्रथम एबेकस का आगमन हुआ। यह बच्चों को शिक्षा दिलाने में काफी लोकप्रिय हुआ। जापान में आज भी शिक्षण कार्य में इसका उपयोग होता है। आधुनिक कम्प्यूटर का सूत्रपात करने का श्रेय इंग्लैण्ड के वैज्ञानिक चार्ल्स बैवेज को जाता है। भारत में कम्प्यूटर का आगमन 1985 के आसपास हुआ, परन्तु भारत अब कम्प्यूटर निर्माण के क्षेत्र में स्वावलम्बी बन चुका है।

विज्ञान और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में गणित की जटिल विस्तृत गिनतियाँ, युद्ध में विमानों, पनडुब्बियों, शत्रु के निश्चित ठिकानों पर सटीक हमला करने वाली मिसाइलें कम्प्यूटर द्वारा ही संचालित होती हैं। सूचनाएँ एकत्र करने में कम्प्यूटर का व्यापक रूप में प्रयोग हो रहा है। चिकित्सा क्षेत्र में कम्प्यूटरीकृत मशीनों के द्वारा चिकित्सा विज्ञान नई उँचाइयों को छू रहा है।

लगभग प्रत्येक क्षेत्र में आज कम्प्यूटर का उसकी उपयोगिता के कारण व्यापक रूप से प्रयोग हो रहा है। रेलवे स्टेशनों, हवाई अड्डों पर कम्प्यूटर का प्रयोग आरक्षण आदि के लिए किया जा रहा है। चिकित्सा के क्षेत्र में कम्प्यूटरीकृत मशीनों का प्रयोग रोगी का रोग पहचानने और चिकित्सा करने में किया जा रहा है। बैंकों , लेखा विभागों में कम्प्यूटर चमत्कारी भूमिका निभा रहा है। कम्प्यूटर का यह रोमांचकारी और सुविधा प्रदायक पक्ष एक खतरे की घंटी भी है। धीरे-धीरे कम्प्यूटर मनुष्य को निष्क्रिय और उत्साह विहीन प्राणी बनाता जाएगा। उसकी प्राकृतिक क्षमताओं का ह्रास होता जायेगा। वर्तमान स्थिति से स्पष्ट हो रहा है कि आगे के युद्ध कम्प्यूटर नियन्त्रित होंगे और क्षणमात्र में मानवों के विशाल नगर व बस्तियाँ ध्वस्त की जा सकेंगी। इसके अलावा यह भी यथार्थ है कि कम्प्यूटर आज विश्व की तीसरी आँख बन चुका है क्योंकि कम्प्यूटर पर इंटरनेट के माध्यम से अल्प समय में ही संसार के किसी भी कोने की कोई भी सूचना, आँकड़े या समाचार तुरन्त प्राप्त किये जा सकते हैं। अन्तरिक्ष और दूरसंचार के क्षेत्र में कम्प्यूटर ने क्रान्ति ला दी है। आज मानव विश्व युद्धों की आशंका से त्रस्त है परन्तु आगे उसे ब्रह्माण्ड युद्धों को भी झेलना पड़ सकता है।

आज कम्प्यूटर के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। कम्प्यूटर के कारण प्रत्येक क्षेत्र में विकास की गति दस गुनी से लेकर हजार गुनी तक बढ़ सकती है।

❑❑❑

टेस्ट-2

अधिकतम अंक 10

खण्ड-'क'

1. **(i)** गरीब और अमीर बच्चों के जीवन की असमानताओं को दर्शाना ही काव्यांश का मुख्य प्रतिपाद्य है।

(ii) इस पंक्ति में अँधेरे तात्पर्य समाज में व्याप्त विषमता और भेदभाव से है।

(iii) अँधेरे मे दुबकती हुई बच्ची इस कविता में देश का प्रतिनिधित्व कर रही है।

खण्ड-'ख'

2. बढ़ती जनसंख्या पर अंकुश नहीं लगाने पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ेगा। (सरल वाक्य)

3. माँ से अभी तक खड़ा नहीं हुआ जाता। (भाववाच्य)

4. **बूढ़ा—** विशेषण, गुणवाचक पुल्लिंग, एकवचन **धीरे-धीरे—** अव्यय, क्रियाविशेषण, रीतिवाचक चलता है क्रिया विशेषण।

5. भयानक रस।

खण्ड–'ग'

6. **(i)** बिस्मिल्ला खाँ ने शास्त्रीय संगीत और शहनाई को विश्व भर में नई पहचान दिलाई। उनका सभी धर्मों के प्रति आदर, व्यक्तित्व की सरलता और सादगी को देखकर कह सकते हैं कि वे सच्चे अर्थों में भारत-रत्न थे और भारतीय गंगा-जमुनी संस्कृति का प्रमाण भी थे।

(ii) मन्नू भंडारी की माँ धैर्य और सहन-शक्ति में धरती से कुछ ज्यादा ही थीं ऐसा इसलिए कहा गया है कि क्योंकि वे पिताजी की हर ज्यादती को अपना प्राप्य और बच्चो की हर जिद को अपना फर्ज समझकर बड़े सहज भाव से स्वीकार करती थीं उन्होंने जिंदगी भर अपने लिए कुछ नहीं माँगा, चाहा नहीं केवल दिया ही दिया। इसीलिए लेखिका के भाई बहनों का सारा लगाव भी माँ के साथ था।

(iii) बचपन में उनकी माँ ने भविष्यवाणी की कि 'लड़का हाथ से गया' जब फ़ादर ने इंजीनियरिंग के अन्तिम वर्ष में पढ़ाई छोड़कर संन्यासी होकर भारत आने का निर्णय लिया, तब वह भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई।

(iv) नेताजी की मूर्ति पर किसी बच्चे के हाथ से बने सरकंडे के चश्मे को देखकर हालदार साहब के मन में आए निराशा के भाव आशा में परिवर्तित होने के कारण उनकी आँखें भर आई होंगी।

7. **(i)** कवि अनुभव करता है कि बच्चे के स्पर्श से निष्ठुर हृदय भी अपनी निष्ठुरता छोड़कर सहृदय बन जाएगा।

(ii) शिशु का धुल-धूसरित शरीर देखकर कवि को लगता है कि मानों शिशु के रूप में कमल, तालाब को छोड़कर उसकी झोंपड़ी में खिल गया हो।

8. **(i)** उद्धव कृष्ण के निकट रहते हुए भी उनके प्रेम से वंचित हैं, उन्हें कृष्ण में अनुराग उत्पन्न नहीं है इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या होगा? प्रेम की पीड़ा न सहन करने के कारण वे भाग्यशाली हो सकते हैं।

(ii) परशुराम की बात सुनकर राम उन्हें शांत करने का प्रयास करते हैं, क्योंकि राम का स्वभाव शांत, विनम्र, ऋषि मुनियों के प्रति अपार श्रद्धा तथा मर्यादाशीलता आदि गुणों से परिपूर्ण हैं।

(iii) कवि के अनुसार फसलें पानी, मिट्टी, धूप, हवा और मानव श्रम के मेल से बनी हैं। इनमें सभी नदियों के पानी का जादू समाया हुआ है। सभी प्रकार की मिट्टियों का गुण-धर्म है। सूरज और हवा का प्रभाव समाया है। इन सबके साथ किसानों और मजदूरों का श्रम भी सम्मिलित है।

(iv) नौसिखिया से आशय है— गायन को नया-नया सीखने वाला। जब उत्साह गिरने का प्रभाव उस पर पड़ता है तो उसका गला बंद हो जाता है।

9. लेखिका जब प्रकृति के अलौकिक सौन्दर्य में डूबी हुई थी; उसी समय उसका ध्यान पत्थर तोड़ती हुई पहाड़ी औरतों पर गया। जिनके शरीर तो गुँथे हुए आटे के समान कोमल थे किन्तु उनके हाथों में कुदाल और हथौड़े थे। उनमें से कुछ की पीठ पर बँधी एक बड़ी टोकरी में उनके बच्चे भी थे। इतने स्वर्गीय सौन्दर्य के बीच मातृत्व और श्रम साधना के साथ-साथ भूख, मौत, दैन्य और ज़िदा रहने की जंग जो पहाड़ों में रास्ता बनाने वाली ये श्रमिक औरतें झेल रही हैं। प्राकृतिक सौन्दर्य में इस दृश्य ने लेखिका की चेतना को झकझोर डाला।

अथवा

सरकारी तंत्र में जॉर्ज पंचम की नाक लगाने को लेकर जो चिंता या बदहवासी दिखाई देती है, वह उनकी गुलाम एवं चाटुकारिता पूर्ण मानसिकता को दर्शाती है। हमें स्वतंत्रता प्राप्त किए हुए लगभग 65 वर्ष हो चुके हैं फिर भी नाक लगाने का कार्य अनिवार्य माना गया अन्यथा दिल्ली आने पर रानी एलिजाबेथ नाराज़ हो जाएँगी। सरकार का हर कार्य केवल खानापूर्ति के लिए था न कि कर्त्तव्य बोध के लिए। स्वतंत्र होने के बावजूद भी भारतीय सरकार विदेशी उच्चाधिकारियों को नाराज़ नहीं करना चाहती थी। यह घटना भारतीयों की गुलामी की मानसिकता अब भी बरक़रार है, इस बात का द्योतक है। सरकारी तंत्र उस अंग्रेज अधिकारी जार्ज पंचम की नाक लगाने के लिए चिंतित है, जिन्होंने हम पर विभिन्न अत्याचार किए थे।

खण्ड–'घ'

10. परीक्षा भवन

दिल्ली– 7

दिनांक : .....

प्रिय मित्र कबीर,

तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। पढ़कर बहुत खुशी हुई कि तुम मेरे प्रत्येक विचारों एवं कार्यों से सहमत हो।

मित्रवर! तुम्हें यह सुनकर बड़ी खुशी होगी कि हमारे विद्यालय के कुछ विद्यार्थियों के दल को साक्षरता अभियान के लिये चुन लिया गया है, उसमें मैं भी शामिल हूँ।

हम लोगों के इस अभियान दल के सभी सदस्यों ने निरक्षरों को साक्षर बनाने का दृढ़ संकल्प कर लिया है। यही नहीं कुछ निरक्षरों को पढ़ाना भी शुरू कर दिया है। इस अभियान में हम लोगों ने 100 अनपढ़ों को पढ़ाने की सूची बना ली है। मैं इस अभियान–दल का निरीक्षक हूँ। इसलिए मुझे अत्यधिक मेहनत करनी पड़ती है। खुशी की बात है कि समाचार–पत्र भी इसको महत्व दे रहे हैं।

आशा है कि तुम इससे प्रेरणा लोगे। इस विषय में अपना विचार पत्र द्वारा प्रस्तुत करोगे।

इस विश्वास के साथ।

तुम्हारा अभिन्न मित्र,

क. ख. ग.

अथवा

आवश्यकता है ऐसे टीचर्स की जो सभी विषयों में हाईस्कूल तक अंग्रेजी माध्यम से पढ़ा सके। योग्यता–सम्बन्धित विषय में एम.ए., बी.एड. या एम.एस.सी., बी.एड.। मिले प्रतिदिन 10-12 बजे तक प्रधानाचार्य, मिल्टन पब्लिक स्कूल, जयपुर हाउस, आगरा।

❑❑❑